BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 3, Issue 2, April-June, 2025
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

भारत में पर्यावरण और पर्यावरण पत्रकारिता का उद्भव एवं विकास

विकास शिशौदिया (शोधार्थी)
पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग
श्रीगुरु रामराय विश्वविद्यालय,देहरादून

सन्दर्भ – पर्यावरण शब्द का अर्थ हर व्यक्ति के लिए अलग–अलग हो सकता है। यह शब्द किसी के लिए जंगलों और नदियों का संरक्षण हो सकता है, तो किसी और के लिए यह शहरी प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन का समाधान। इसी प्रकार, पर्यावरण पत्रकारिता का भी अर्थ और दृष्टिकोण समय, स्थान, और व्यक्ति के अनुसार भिन्न हो सकता है।

इस शोध पत्र में हम पर्यावरण की परिभाषा के विकास को समझेंगे, पर्यावरण पत्रकारिता के विभिन्न पहलुओं का अन्वेषण करेंगे, और यह जानने का प्रयास करेंगे कि पर्यावरण के मुद्दों पर कौन–कौन से अन्य माध्यम और व्यक्ति संवाद स्थापित करते हैं। साथ ही, हम पर्यावरण पत्रकारिता को एक पेशे के रूप में समझने की शुरुआत करेंगे, ताकि इसके सामाजिक और मीडिया परिदृश्य में इसके महत्व को गहराई से समझा जा सके।

पर्यावरण का अर्थ और उसका विकास– पर्यावरण शब्द लैटिन मूल environ से लिया गया है, जिसका अर्थ है आसपास। इसका उपयोग पहले मुख्य रूप से प्राकृतिक दुनिया का वर्णन करने के लिए किया जाता था, लेकिन समय के साथ इसका श्रेत्र बढ़ा। आज, पर्यावरण का अर्थ न केवल प्राकृतिक संसाधनों और पारिस्थितिक तंत्र से है, बल्कि इसमें मानवीय गतिविधियों, शहरीकरण, सामाजिक मुद्दों, और तकनीकी विकास के प्रभाव भी शामिल हैं। पर्यावरण के इस विस्तृत दृष्टिकोण ने पर्यावरण पत्रकारिता के कार्यक्षेत्र को और अधिक जटिल और व्यापक बना दिया है।

पर्यावरण पत्रकारिता का अर्थ– पर्यावरण पत्रकारिता का उद्देश्य पर्यावरणीय समस्याओं और समाधानों पर ध्यान केंद्रित करना है। यह पत्रकारिता का वह क्षेत्र है, जो वैज्ञानिक अनुसंधानों, नीतिगत निर्णयों, और सामाजिक जागरूकता अभियानों को लोगों तक पहुंचाता है। पर्यावरण पत्रकारिता एक महत्वपूर्ण और विकसित होती पत्रकारिता की शाखा है, जो न केवल पर्यावरणीय मुद्दों को सामने लाती है, बल्कि जनता को उनके समाधान में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित करती है। पर्यावरण पत्रकारिता केवल खबरें देने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह जनता को शिक्षित करने और बदलाव लाने का माध्यम भी है। पत्रकारिता के इस क्षेत्र में निष्पक्षता और प्रामाणिकता बनाए रखना अत्यंत आवश्यक है। पर्यावरण पत्रकारिता आज के मीडिया परिदृश्य में अन्य प्रकार की पत्रकारिता (जैसे राजनीति, खेल, या व्यवसाय) के साथ प्रतिस्पर्धा करती है। पर्यावरणीय मुद्दों पर सही और सटीक रिपोर्टिंग समाज को जागरूक और प्रेरित कर सकती है।

पर्यावरण पत्रकारिता का इतिहास और विकास – पर्यावरण पत्रकारिता का इतिहास मानव सभ्यता के प्रकृति से जुड़ाव और संरक्षण के प्रयासों से जुड़ा है। हालाँकि इसे एक विशिष्ट क्षेत्र के रूप में मान्यता 20वीं सदी में मिली, लेकिन प्रकृति और पर्यावरण पर संवाद की जड़ें प्राचीन समय से ही मिलती हैं। जैसे–जैसे पर्यावरणीय समस्याएँ बढ़ीं, पत्रकारिता के इस क्षेत्र का विकास और विस्तार हुआ। प्राचीन युग की बात करें तो ,प्रकृति और पर्यावरण का वर्णन वैदिक साहित्य, प्राचीन चीनी ग्रंथों, और ग्रीक दार्शनिकों के लेखन में मिलता है। भारत में, ऋग्वेद और उपनिषदों में पर्यावरण के संरक्षण का उल्लेख किया गया है। इन ग्रंथों में पृथ्वी, जल, वायु और वनस्पतियों को देवताओं के समान माना गया। मध्यकालीन युग के समय धार्मिक साहित्य में प्रकृति की रक्षा पर जोर दिया गया। भक्ति आंदोलन और संत कवियों ने पर्यावरणीय संतुलन की बातें कीं। हालाँकि इस समय पर्यावरण पत्रकारिता जैसा कोई संगठित रूप नहीं था, लेकिन लोककथाओं और कहावतों के माध्यम से प्रकृति संरक्षण

@2025 Bihar Shodh Samaagam

का संदेश दिया गया। 19वीं सदी औद्योगिक क्रांति के दौरान, वनों की कटाई, प्रदूषण, और जैव विविधता के नुकसान ने पर्यावरणीय समस्याओं को बढ़ाया।

भारत में पर्यावरण पत्रकारिता का विकास – पर्यावरण पत्रकारिता वह विशेष प्रकार की पत्रकारिता है जो पर्यावरणीय मुद्दों, प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन, वन्यजीव संरक्षण, और पारिस्थितिकी तंत्र के बारे में जागरूकता फैलाने का कार्य करती है। यह पत्रकारिता समाज में पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी और जागरूकता को बढ़ाने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भारत में पर्यावरण पत्रकारिता का विकास पिछले कुछ दशकों में तेजी से हुआ है, और इसने सामाजिक और राजनीतिक नीतियों पर गहरा प्रभाव डाला है।

भारत में पर्यावरण पत्रकारिता का आरंभ स्वतंत्रता संग्राम के बाद हुआ, जब औद्योगिकीकरण और शहरीकरण के कारण प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव बढ़ने लगा था। हालांकि, यह क्षेत्र 1970 और 1980 के दशक तक प्रमुखता से उभर नहीं पाया था। इस दौरान पर्यावरण के प्रति जागरूकता धीरे–धीरे बढ़ रही थी, लेकिन इसे मुख्यधारा के मीडिया में ज्यादा जगह नहीं मिल रही थी। सन् 1970 के दशक में भारत में कई महत्वपूर्ण पर्यावरणीय घटनाएँ घटित हुईं, जैसे कि चिपको आंदोलन (1973), जो वन संरक्षण के लिए था, और साइलेंट वैली परियोजना (1978), जिसने जलवायु परिवर्तन और वन्यजीव संरक्षण की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन आंदोलनों के कारण पर्यावरणीय मुद्दे मुख्यधारा के मीडिया में चर्चा का हिस्सा बने और पर्यावरण पत्रकारिता की नींव रखी गई। 1980 के दशक में भारत में पर्यावरण पत्रकारिता का पहला बड़ा कदम था, जब कई पत्रकारों और लेखकों ने पर्यावरणीय मुद्दों पर लिखना शुरू किया। इस दौरान इंडियन एक्सप्रेस, टाइम्स ऑफ इंडिया, और हिंदुस्तान टाइम्स जैसे प्रमुख समाचार पत्रों ने पर्यावरणीय समस्याओं को प्रमुखता से उठाया। पर्यावरणीय मुद्दों पर रिपोर्टिंग और लेखन शुरू हुआ, जिसमें प्रदूषण, जल संकट, और वन्यजीव संरक्षण के विषय शामिल थे।

प्रमुख पर्यावरण आंदोलनों का प्रभाव– भारत में चिपको आंदोलन, नर्मदा बचाओ आंदोलन, और अन्य पर्यावरण आंदोलनों ने पर्यावरण पत्रकारिता के महत्व को बढ़ाया। इन आंदोलनों ने मीडिया में पर्यावरणीय मुद्दों को गंभीरता से उठाने की आवश्यकता को स्पष्ट किया। पर्यावरणीय संगठनों की भूमिका कई गैर सरकारी संगठन (NGOs) जैसे इंटरनेशनल फंड फॉर एग्रीकल्चर डिवेलपमेंट (IFAD) और ग्रामीण उन्नति संस्थान (Rural Development Institute) ने पर्यावरण संरक्षण और जागरूकता बढ़ाने में मदद की। इन संगठनों ने मीडिया के साथ मिलकर रिपोर्ट तैयार की और जन जागरूकता फैलाने के लिए पत्रकारिता का उपयोग किया। 1990 के दशक में इंटरनेट और टेलीविजन की भूमिका बढ़ी और पर्यावरणीय मुद्दों पर रिपोर्टिंग और अधिक विस्तारित हुई। पर्यावरण पत्रकारिता ने अब पारंपरिक मीडिया के अलावा डिजिटल और ऑनलाइन मीडिया को भी अपनी पहुंच बनाई।

पर्यावरण संरक्षण में पर्यावरण पत्रकारिता की भूमिका – पर्यावरण पत्रकारिता का पर्यावरण संरक्षण में महत्वपूर्ण योगदान है, क्योंकि यह न केवल लोगों को पर्यावरणीय मुद्दों के बारे में जागरूक करती है, बल्कि समाज में बदलाव लाने के लिए एक उत्प्रेरक का काम करती है। पर्यावरण पत्रकारिता के माध्यम से पर्यावरण से संबंधित विभिन्न संकटों, जैसे प्रदूषण, जैव विविधता का नुकसान, जलवायु परिवर्तन, और प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन, को प्रमुखता से उजागर किया जाता है। इसके माध्यम से लोग यह समझ पाते हैं कि उनके आसपास क्या हो रहा है और वे इस पर कैसे प्रतिक्रिया कर सकते हैं। पर्यावरण पत्रकारिता सरकार और उद्योगों पर दबाव बनाने में भी सहायक होती है। जब मीडिया किसी पर्यावरणीय समस्या को उठाती है, तो यह सार्वजनिक मंच पर उस मुद्दे को पेश करती है, जिससे सरकारें और निगम अपनी जिम्मेदारी को समझते हुए कदम उठाने के लिए मजबूर होते हैं। उदाहरण के लिए, किसी नदी के प्रदूषण, या किसी राष्ट्रीय उद्यान में अवैध शिकार के मामले को उजागर करने पर प्रशासन तुरंत कार्रवाई करने की स्थिति में आता है।

पर्यावरण पत्रकारिता न केवल तथ्यों और आंकड़ों की रिपोर्टिंग करती है, बल्कि यह संवेदनशील मुद्दों को एक मानवतावादी दृ ष्टिकोण से प्रस्तुत करती है। यह दर्शाती है कि पर्यावरणीय नुकसान केवल प्राकृतिक परिवर्तनों से नहीं होता, बल्कि मानवीय गतिविधियों से भी होता है। जब पत्रकार पर्यावरणीय मुद्दों को आम लोगों से जोड़कर प्रस्तुत करते हैं, तो यह समाज में जागरूकता फैलाता है और लोगों को पर्यावरण संरक्षण की दिशा में कदम उठाने के लिए प्रेरित करता है।

विश्लेषणात्मक रिपोर्टिंग और गहरी जांच पर्यावरण पत्रकारिता की एक महत्वपूर्ण भूमिका है। पत्रकारिता के माध्यम से जटिल पर्यावरणीय समस्याओं का विश्लेषण किया जाता है, जैसे जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण और अन्य संकटों की जड़ों तक पहुंचने की कोशिश की जाती है। इस तरह के विश्लेषण से न केवल समस्याओं की गहरी समझ मिलती है, बल्कि इनके समाधान के लिए नए विचार और सुझाव भी सामने आते हैं। पर्यावरण पत्रकारिता द्वारा रिपोर्ट की गई विश्लेषणात्मक जानकारी नीति निर्धारणकर्ताओं को ठोस निर्णय लेने में मदद करती है।

पर्यावरण पत्रकारिता द्वारा संवाद और चर्चा की प्रक्रिया को बढ़ावा दिया जाता है। यह मुद्दों को चर्चा के मंच पर लाकर समाज में बहस को प्रेरित करती है। मीडिया के द्वारा किए गए संवाद, लेख और रिपोर्ट समाज में महत्वपूर्ण पर्यावरणीय मुद्दों पर बहस को जन्म देते हैं। यह न केवल सरकार और नीति निर्धारकों तक मुद्दों को पहुँचाता है, बल्कि आम जनता को भी सूचित करता है, जिससे वह अपनी भूमिका समझने और सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रेरित होती है।

अंत में, पर्यावरण पत्रकारिता एक सशक्त माध्यम है जो न केवल जागरूकता फैलाता है, बल्कि स्वच्छता अभियान और सतत विकास जैसे अभियानों को भी समर्थन प्रदान करता है। उदाहरण के लिए, वृक्षारोपण अभियान, जल संरक्षण, या हरित ऊर्जा के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए पत्रकारिता द्वारा किए गए प्रचार–प्रसार से लोग अपनी जीवनशैली में बदलाव लाने के लिए प्रेरित होते हैं। पर्यावरणीय मुद्दों को साकारात्मक दृष्टिकोण से प्रस्तुत करने के कारण, यह पत्रकारिता लोगों में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए एक उत्प्रेरक का काम करती है।

इस प्रकार, पर्यावरण पत्रकारिता पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में एक अभिन्न और प्रभावी उपकरण साबित होती है, जो समाज को न केवल सूचित करती है, बल्कि प्रेरित भी करती है। यह प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के महत्व को समझाते हुए एक जागरूक और जिम्मेदार समाज का निर्माण करती है।

भारत में पर्यावरण पत्रकारिता की वर्तमान स्थिति और भविष्य–

भारत में पर्यावरण पत्रकारिता ने समय के साथ महत्वपूर्ण प्रगति की है। आज यह पत्रकारिता का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र बन चुका है, जो न केवल पर्यावरणीय मुद्दों को उजागर करता है, बल्कि समाज में जागरूकता भी फैलाता है। जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, वन्यजीव संरक्षण और जैव विविधता जैसे मुद्दे अब मुख्यधारा के मीडिया में प्रमुखता से उठाए जाते हैं। इस निबंध में हम भारत में पर्यावरण पत्रकारिता की वर्तमान स्थिति और इसके भविष्य की संभावनाओं पर चर्चा करेंगे।

1. **मुख्यधारा में वृद्धि–** पर्यावरण पत्रकारिता ने पिछले कुछ दशकों में प्रमुखता प्राप्त की है। पहले यह क्षेत्र मुख्यधारा के मीडिया में कम स्थान पाता था, लेकिन अब समाचार पत्रों, टीवी चौनलों और ऑनलाइन मीडिया में पर्यावरणीय मुद्दों पर विस्तृत रिपोर्टिंग होती है। भारतीय मीडिया ने अब इसे एक प्रमुख विषय के रूप में स्वीकार किया है, और कई समाचार पत्रों और चौनलों ने पर्यावरणीय रिपोर्टिंग के लिए विशेष संवाददाता नियुक्त किए हैं।

2. **ऑनलाइन और डिजिटल मीडिया का प्रभाव–** इंटरनेट और सोशल मीडिया के प्रसार ने पर्यावरण पत्रकारिता में क्रांतिकारी बदलाव लाया है। ब्लॉग्स, पॉडकास्ट्स, यू–ट्यूब चौनल्स और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स ने पर्यावरणीय मुद्दों को व्यापक रूप से उजागर किया है। डिजिटल मीडिया ने लोगों तक पर्यावरणीय मुद्दों को तेजी से पहुँचाने में मदद की है और यह प्लेटफॉर्म अब मीडिया की मुख्यधारा बन चुके हैं।

@2025 Bihar Shodh Samaagam

3. पर्यावरणीय रिपोर्टिंग के प्रमुख विषय– जलवायु परिवर्तन और इसके प्रभाव पर व्यापक रिपोर्टिंग होती है, विशेष रूप से भारत में सूखा, बाढ़, और तूफान जैसी घटनाओं के बढ़ते खतरे को लेकर।

प्रदूषण वायु, जल और मृदा प्रदूषण पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है, खासकर महानगरों और औद्योगिकीकरण से प्रभावित क्षेत्रों में। वनों और वन्यजीवों का संरक्षणरू बाघों, हाथियों, और अन्य वन्यजीवों की रक्षा से जुड़े मुद्दों पर रिपोर्टिंग की जाती है, और इनके संरक्षण हेतु जागरूकता फैलाने की कोशिश की जाती है। कृषि और जल संकटरू जलवायु परिवर्तन के कारण कृषि संकट और जल संकट के मुद्दे भी प्रमुख रूप से उठाए जा रहे हैं।

4. संगठनों और आंदोलन की भूमिका– कई गैर सरकारी संगठन (छळव्े) और पर्यावरण आंदोलनों ने पर्यावरण पत्रकारिता के विकास में मदद की है। चिपको आंदोलन, नर्मदा बचाओ आंदोलन, और प्रोजेक्ट टाइगर जैसे अभियानों के माध्यम से मीडिया ने पर्यावरणीय मुद्दों को प्रमुखता से उठाया है।

5. सामाजिक प्रभाव– पर्यावरण पत्रकारिता ने सरकार और नीति निर्माताओं को पर्यावरणीय मुद्दों पर ध्यान देने के लिए प्रेरित किया है। जैसे–जैसे लोगों में पर्यावरणीय समस्याओं के प्रति जागरूकता बढ़ी है, वैसे–वैसे सरकार ने भी इसे प्राथमिकता दी है।

पर्यावरण पत्रकारिता का भविष्य

1. डिजिटल मीडिया का बढ़ता प्रभाव– आने वाले समय में डिजिटल और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स का प्रभाव और बढ़ेगा। माइक्रो–ब्लॉगिंग साइट्स, वीडियो प्लेटफॉर्म्स, और ऑनलाइन न्यूज पोर्टल्स पर्यावरणीय मुद्दों को तेजी से और व्यापक रूप से फैलाने में मदद करेंगे। युवा पीढ़ी के बीच सोशल मीडिया के माध्यम से इस मुद्दे पर जागरूकता बढ़ेगी।

2. नवीन तकनीकों का उपयोग– नई तकनीकों जैसे डेटा जर्नलिज्म, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, और ड्रोनों का उपयोग पर्यावरण पत्रकारिता में बढ़ सकता है। इससे अधिक सटीक और वैज्ञानिक तरीके से रिपोर्टिंग की जा सकती है, और पर्यावरणीय बदलावों की वास्तविक स्थिति को उजागर किया जा सकता है।

3. स्थानीय रिपोर्टिंग और अनुसंधान– स्थानीय स्तर पर अधिक अनुसंधान और रिपोर्टिंग की आवश्यकता होगी। भारत के दूरदराज के क्षेत्रों में पर्यावरणीय मुद्दों को उजागर करने के लिए स्थानीय पत्रकारिता को बढ़ावा दिया जाएगा। इससे पर्यावरणीय समस्याओं के प्रति अधिक सटीक जानकारी प्राप्त होगी और स्थानीय समाधान मिलेंगे।

4. स्मार्टफोन और मीडिया का संकलन– आने वाले वर्षों में स्मार्टफोन और अन्य तकनीकी उपकरणों का उपयोग बढ़ेगा, जिससे नागरिक पत्रकारिता का क्षेत्र विस्तारित होगा। लोग अपने आसपास के पर्यावरणीय मुद्दों को तुरंत रिकॉर्ड कर सकते हैं और उसे व्यापक रूप से फैलाने में मदद कर सकते हैं।

5. सामुदायिक पत्रकारिता– पर्यावरण पत्रकारिता अब केवल मीडिया संस्थानों तक सीमित नहीं रहेगी, बल्कि यह स्थानीय समुदायों और स्वयंसेवकों तक भी पहुँचने लगेगी। स्थानीय लोग अपनी आवाज उठाएंगे और छोटे समुदायों के मुद्दों को प्रमुखता से उठाया जाएगा। पर्यावरण पत्रकारिता न केवल जागरूकता फैलाने का कार्य करेगी, बल्कि नीति निर्धारण में भी भागीदार बनेगी। यह सरकार और निजी संस्थानों पर दबाव डालने का एक प्रभावी तरीका बनेगा, जिससे पर्यावरणीय समस्याओं पर ध्यान दिया जाएगा और आवश्यक कदम उठाए जाएंगे।

भारत में पर्यावरण पत्रकारिता ने वर्तमान में एक मजबूत आधार तैयार किया है और यह आने वाले समय में और भी प्रभावी होगी। डिजिटल मीडिया, नए तकनीकी उपाय, और सामुदायिक भागीदारी के बढ़ते प्रभाव से पर्यावरणीय मुद्दों को अधिक व्यापक रूप से प्रस्तुत किया जाएगा। इसका उद्देश्य न केवल समाज में पर्यावरणीय जागरूकता फैलाना है, बल्कि इसे नीति निर्माण और कार्यवाही में बदलाव लाने के लिए एक सशक्त उपकरण के रूप में उपयोग करना है। इस दिशा में होने वाली

प्रगति से भारत में पर्यावरणीय समस्याओं को हल करने में मदद मिलेगी और एक स्थायी भविष्य की ओर कदम बढ़ाया जा सकेगा। पर्यावरण पत्रकारिता की सफलता इसके सिद्धांतों पर निर्भर करती है। ये सिद्धांत इसे अन्य पत्रकारिता से अलग और अधिक प्रभावी बनाते हैं।

भारत में पर्यावरण पत्रकारिता की चुनौतियाँ– भारत जैसे विशाल और विविध देश में पर्यावरणीय मुद्दे तेजी से गंभीर रूप ले रहे हैं। वायु और जल प्रदूषण, जंगलों की कटाई, जलवायु परिवर्तन और जैव विविधता का नुकसान जैसी समस्याएँ हर नागरिक के जीवन को प्रभावित कर रही हैं। पर्यावरण पत्रकारिता इन समस्याओं को उजागर करने, जागरूकता बढ़ाने, और उनके समाधान की दिशा में समाज को प्रेरित करने का एक प्रभावशाली माध्यम है। यह न केवल पर्यावरणीय शिक्षा प्रदान करती है बल्कि सरकार और नागरिकों के बीच सेतु का काम भी करती है, ताकि सतत विकास सुनिश्चित हो सके। पर्यावरण पत्रकारिता की चुनौतियाँ, हालांकि, इस क्षेत्र को सीमित करती हैं। मीडिया में पर्यावरणीय मुद्दों को प्राथमिकता की कमी, सूचना और संसाधनों की उपलब्धता का अभाव, और राजनीतिक एवं कॉर्पोरेट दबाव जैसी बाधाएँ इस क्षेत्र के विकास में रुकावट डालती हैं। कई बार पर्यावरणीय रिपोर्टिंग केवल आपदाओं और संकटों तक सीमित रह जाती है, जिससे दीर्घकालिक समाधान और जागरूकता की प्रक्रिया बाधित होती है। इसके अतिरिक्त, भारत के बहुभाषी समाज में पर्यावरणीय विषयों की सामग्री का स्थानीय भाषाओं में अभाव ग्रामीण और क्षेत्रीय दर्शकों तक इस संदेश को पहुँचाने में बड़ी बाधा बनता है।

इन चुनौतियों के बावजूद, भारत में पर्यावरण पत्रकारिता का महत्व कम नहीं होता। यह नागरिकों को अपनी भूमिका समझने और पर्यावरण संरक्षण में योगदान देने के लिए प्रेरित करती है। साथ ही, यह सरकार और निजी क्षेत्रों को जवाबदेह बनाने में मदद करती है। इन चुनौतियों को हल करने के लिए पत्रकारों को बेहतर प्रशिक्षण, संसाधन और सुरक्षा प्रदान करने की आवश्यकता है। इसके साथ ही, समाज और मीडिया को पर्यावरणीय मुद्दों को प्राथमिकता देने की ओर ध्यान देना होगा। तभी यह पत्रकारिता अपने उद्देश्य को प्रभावी रूप से पूरा कर पाएगी :–

•राजनीतिक दबाव निष्पक्षता और नैतिकता बनाए रखने में मदद।

•सूचना की कमी सत्यता और वैज्ञानिक समझ के साथ गहन शोध।

•जनता की उदासीनतारू जागरूकता और प्रेरणा प्रदान करने वाले लेखन के माध्यमसे।

•वित्तीय संसाधनों की कमी गहन शोध और रिपोर्टिंग के लिए पर्याप्त आर्थिक सहयोग का अभाव।

•जागरूकता की कमी ग्रामीण क्षेत्रों में पर्यावरणीय समस्याओं पर कम ध्यान।

•संसाधन और प्रशिक्षण की कमी पर्यावरण पत्रकारिता के लिए विशेषज्ञता की आवश्यकता।

पर्यावरण पत्रकारिता केवल एक पेशा नहीं, बल्कि समाज और पर्यावरण के बीच एक पुल है। इसके सिद्धांत और भूमिका इसे न केवल पत्रकारिता का एक महत्वपूर्ण अंग बनाते हैं, बल्कि इसे समाज में सकारात्मक बदलाव का एक सशक्त माध्यम भी बनाते हैं।

निष्कर्ष– पर्यावरण पत्रकारिता एक महत्वपूर्ण माध्यम है, जो समाज को पर्यावरणीय मुद्दों के प्रति जागरूक करता है। भारत जैसे विशाल और विविधता से भरे देश में पर्यावरणीय समस्याएँ गंभीर रूप ले रही हैं, जैसे वायु और जल प्रदूषण, जंगलों की कटाई, जलवायु परिवर्तन और जैव विविधता का नुकसान। इन समस्याओं की गहराई को समझाने और इनके समाधान की दिशा में लोगों को प्रेरित करने में पत्रकारिता की भूमिका अहम है। यह मीडिया के जरिए न केवल लोगों को जानकारी देती है, बल्कि उन्हें इन मुद्दों पर सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित भी करती है। पर्यावरण पत्रकारिता सरकार और उद्योगों की नीतियों पर नजर रखने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है। यह न केवल प्रशासन की जवाबदेही तय करती है, बल्कि यह भी सुनिश्चित करती है कि

@2025 Bihar Shodh Samaagam

विकास कार्यों में पर्यावरणीय संरक्षण की उपेक्षा न हो। उदाहरण के लिए, अगर किसी परियोजना से पर्यावरणीय क्षति होने की संभावना है, तो पर्यावरण पत्रकारिता उस मुद्दे को प्रमुखता से उठाकर जागरूकता फैलाती है। इससे न केवल प्रभावित समुदायों को अपनी आवाज उठाने का मंच मिलता है, बल्कि नीति–निर्माताओं पर भी दबाव बनता है कि वे सतत विकास को प्राथमिकता दें।

भारत में पर्यावरण पत्रकारिता का महत्व इसलिए भी बढ़ गया है क्योंकि यहाँ की जनसंख्या का बड़ा हिस्सा प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर है। पर्यावरणीय मुद्दों का सीधा प्रभाव किसानों, मछुआरों और आदिवासी समुदायों पर पड़ता है। इस पत्रकारिता के माध्यम से इनकी समस्याओं को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रस्तुत किया जा सकता है। इसके अलावा, यह समाज को यह समझाने में मदद करता है कि पर्यावरण की सुरक्षा केवल सरकार की जिम्मेदारी नहीं है, बल्कि हर नागरिक का कर्तव्य है। इस तरह, पर्यावरण पत्रकारिता भारत के सतत और समावेशी विकास में एक अनिवार्य भूमिका निभाती है। पर्यावरण पत्रकारिता न केवल जानकारी प्रदान करने का माध्यम है, बल्कि यह समाज को पर्यावरणीय शिक्षा भी देती है। यह बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक, सभी वर्गों में पर्यावरण संरक्षण के महत्व को समझाने का कार्य करती है। स्कूलों, कॉलेजों और सामुदायिक संगठनों के लिए पर्यावरण पत्रकारिता प्रेरणा का स्रोत बन सकती है। पर्यावरणीय लेख, रिपोर्ट, वृत्तचित्र और विशेष कार्यक्रम लोगों को यह सिखाते हैं कि वे अपने दैनिक जीवन में छोटे–छोटे बदलाव कर कैसे बड़े सकारात्मक प्रभाव डाल सकते हैं। इससे न केवल व्यक्तिगत स्तर पर बल्कि सामूहिक स्तर पर भी पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी की भावना जागृत होती है।

पर्यावरण पत्रकारिता नागरिकों और नीति–निर्माताओं के बीच संवाद का पुल बनाने का काम करती है। जब पर्यावरणीय समस्याओं को मीडिया में प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया जाता है, तो यह न केवल सरकार को कार्रवाई करने के लिए प्रेरित करता है, बल्कि आम जनता को भी पर्यावरणीय आंदोलनों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करता है। कई बार, बड़े प्रोजेक्ट्स और औद्योगिक गतिविधियों के चलते पर्यावरणीय नुकसान अनदेखा कर दिया जाता है। लेकिन, जब पत्रकार इन मुद्दों को उजागर करते हैं, तो यह जनता और सरकार दोनों के लिए चेतावनी का कार्य करता है। इस प्रकार, भारत में पर्यावरण पत्रकारिता न केवल समस्याओं को उजागर करती है बल्कि उनके समाधान में भी अहम भूमिका निभाती है। यह लोगों को उनकी जिम्मेदारियों का एहसास कराती है और एक सतत् और सुरक्षित भविष्य की नींव रखती है।

सन्दर्भ सूची :–

1- https://shabdkosh.com, 27/4/2025,2.09pm.

2- https://www.iberdrola.com,3/3/2025, 6.30am.

3- https://www.mediadefence.org,15/3/2025,3.50pm.

4- https://www.thomsonfoundation.org,15/4/2025,4.13pm.

5- https://cpcb.nic.in, 3.06pm,4 march2025.

6- https://www.britannica.com 6.07 am,7april2025

7- www.nrdc.org 6.15 am, 7april2025.

8- https://www.indiacode.in,6.01am,7 april 2025.

@2025 Bihar Shodh Samaagam